12-02-2022

निरीक्षण के दौरान डॉ. नवीन प्रकाश सिंह साथ में प्रो. नरेन्द्र मोहन।

खेत से सीधे कारखाने तक गन्ना पहुंचाने के लिए विकसित की जाय तकनीक

कानपुर, 11 फरवरी। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में कृषि लागत एवं मूल्य आयोग के अध्यक्ष डॉ. नवीन प्रकाश सिंह ने निरीक्षण किया। उन्होंने कहाकि संस्थान के वैज्ञानिक कम उत्पादन लागत पर बाजार की मांग के अनुरूप विभिन्न गुणवत्ता की चीनी के उत्पादन के लिए तकनीक विकसित करनी चाहिये। साथ ही भारतीय चीनी उद्योग के शीर्ष संगठनों के साथ मिलकर मूल्य वर्धित उत्पादों के उत्पाद के लिए तैयार नई तकनीक को बढ़ावा देना होगा। शुक्रवार को संस्थान में निरीक्षण के दौरान डॉ. नवीन प्रकाश सिंह ने भारतीय चीनी उद्योग में विविधीकरण के मॉडल व मूल्यवर्धन के क्षेत्रों में आर्थिक स्थिरता प्राप्त करने जैसे विषयों पर चर्चा की। डॉ. सिंह ने कहा कि खेत से सीधे कारखाने तक गन्ना पहुंचाने के लिए भी तकनीक विकसित करनी होगी। चीनी उत्पादक राज्यों में गन्ने की उत्पादकता काफी हद तक भिन्न-भिन्न होती है, इसका सीधा प्रभाव चीनी मिलों पर पड़ता है। उन्होंने कहाकि संस्थान की सभी प्रयोगशाला, प्रायोगिक चीनी मिल, खोई से प्राप्त ग्रेफीन ऑक्साइड, आहार फाइबर, वैनिलिन आदि मूल्य वर्धित जैव रसायनों के उत्पादन पर गहरी रुचि दिखाई। संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने प्रजेंटेशन के माध्यम से वैज्ञानिकों द्वारा विकसित सभी नई तकनीक की जानकारी दी। साथ ही विभिन्न बहुउत्पादों के बारे में दी जानकारियां दी गई।

एनएसआई में कृषि लागत एवं मूल्य आयोग के अध्यक्ष डा. नवीन प्रकाश सिंह ने किया निरीक्षण

भारतीय चीनी उद्योग में विविधीकरण के मॉडल तथा मूल्यवर्धन के क्षेत्रों पर की चर्चा

कानपुर (नगर छाया समाचार)। डॉ. नवीन प्रकाश सिंह, अध्यक्ष, कृषि लागत और मूल्य आयोग ने आज राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर का दौरा किया और भारतीय चीनी उद्योग में विविधीकरण के मॉडल तथा मूल्यवर्धन के क्षेत्रों में आर्थिक स्थिरता प्राप्त करने जैसे विषयों पर चर्चा की।

दौरे के दौरान, संस्थान के निदेशक के द्वारा प्रेजेंटेशन के माध्यम से राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की गतिविधियों और भारतीय चीनी उद्योग के विकास और उन्नति में संस्थान की भूमिका के बारे में जानकारी दी गई। उन्होंने जैव-खाद्य, जैव-ऊर्जा, जैव-रसायन और जैव-जल के उत्पादन के लिए चीनी कारखानों को जैव-रिफाइनरियों में परिवर्तित करने के लिए संस्थान द्वारा प्रस्तावित रोड मैप का विवरण भी प्रस्तुत किया। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक श्री नरेंद्र मोहन ने कहा कि चीनी उद्योग को आर्थिक और पर्यावरणीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए गन्ने के अवशेषों और उप-उत्पादों सहित गन्ना के संपूर्ण मूल्यवर्धन क्षमता का दोहन करने की आवश्यकता है। चूंकि चीनी की कीमतें अस्थिर रहती हैं तथा विभिन्न आंतरिक और बाहरी कारकों से प्रभावित होती रहती है, अतः चीनी मिलों को अन्य स्त्रोतों के माध्यम के राजस्व बढ़ाने के लिए इंडस्ट्री के बाईप्रोडक्ट का नवीन तरीके से उपयोग करने की विधियों पर काम करना चाहिए।

डॉ. नवीन प्रकाश सिंह, अध्यक्ष, कृषि लागत और मूल्य ने इच्छा व्यक्त की कि संस्थान कम उत्पादन लागत पर बाजार की मांग के अनुसार विभिन्न गुणवत्ता की चीनी के गुणों के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकियों को विकसित करने पर काम करें, साथ ही साथ संस्थान को भारतीय चीनी उद्योग के शीर्ष संगठनों के साथ बातचीत के माध्यम से मूल्य वर्धित उत्पादों के उत्पादन के लिए विसकित प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देना चाहिए। उन्होंने कहा कि चीनी उद्योग के सभी स्टॉक होल्डरों के हितों की रक्षा के लिए हमें खेत से कारखाने तक हर क्षेत्र में काम करना होगा। उन्होंने कहा कि विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों में गन्ने की उत्पादकता काफी हद तक भिन्न-भिन्न होती है और इस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि यह कारण चीनी कारखानों के वित्तीय लाभ को काफी हद तक प्रभावित करता है।

डॉ. सिंह ने संस्थान द्वारा संचालित विभिन्न अनुसंधान गतिविधियों को देखने के लिए संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं का भी दौरा किया तथा संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों यथा खोई से प्राप्त ग्रेफीन ऑक्साइड, आहार फाइबर और वैनिलिन आदि विभिन्न मूल्य वर्धित जैव-रसायनों के उत्पादन में गहरी रुचि ली। उन्होंने इस दौरान फोर्टिफाइड चीनी के उत्पादन सहित विभिन्न गुणवत्ता के चीनी गुणों के उत्पादन का निरीक्षण करने के लिए विशिष्ट शर्करा अनुभाग का भी दौरा किया।

NSI discussing areas of value addition in sugar industry

KANPUR (PNS): Dr Naveen Prakash Singh, Chairman, Agriculture Costs and Prices, chairing a high-level meeting at National Sugar Institute, on Friday, said efforts were being made to discuss models of diversification and areas for value addition to attain economic sustainability of the Indian sugar industry.

He said that NSI may work on developing technologies for production of different sugar qualities as per market demand at a lower cost of production and promote developed technologies for production of value added products through greater interaction with apex organisations of Indian sugar industry.

He said the focus had to be to work in all directions, farm to factory, to see that the interests of all stakeholders of the sugar industry remained protected. He said the sugarcane productivities in different sugar producing states varied to a significant extent and this required immediate attention as it affected the financial health of sugar factories to a greater extent.

Addressing the meeting, NSI Director, Prof Narenda Mohan, highlighted the activities of the sugar institute and its role in growth and development of the Indian sugar industry. He presented details of the institute's proposed road map for converting sugar factories to bio-refineries for producing bio-food, bio-energy, bio-chemical and bio-water.

Prof Mohan said the sugar industry was required to harness potential of the entire sugarcane value chain, including sugarcane plant residues and by-products, for economic and environmental sustainability. He said as the prices of sugar remained volatile and were affected by various internal and external factors, sugar factories should work on increasing revenues through other sources by utilising by-products in an innovative manner.

Later, Singh visited various facilities and laboratories of the NSI Kanpur to see the ongoing research activities. He took keen interest in technologies developed by the institute for production of various value added bio-chemicals like graphene oxide, dietary fibre and vanillin from bagasse. He also visited the speciality sugar division to observe production of various sugar qualities, including production of fortified sugar.

'खेत से कारखाने तक काम करे चीनी उद्योग'

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

कानपुर।

कृषि लागत और मूल्य आयोग के अध्यक्ष डॉ. नवीन प्रकाश सिंह ने कहा कि चीनी उद्योग के सभी स्टॉक होल्डरों के हितों की रक्षा के लिये चीनी उद्योग को खेत से लेकर कारखाने तक काम करना होगा। श्री सिंह ने विभिन्न गुणवत्तायुक्त चीनी के उत्पादन पर जोर दिया।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान का निरीक्षण करने आये कृषि लागत और मूल्य आयोग के अध्यक्ष डॉ. नवीन प्रकाश सिंह को संस्थान के निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन ने प्रेजेंटेशन के माध्यम से संस्थान की गतिविधियों और भारतीय चीनी उद्योग के विकास में संस्थान की भूमिका की जानकारी दी। उन्होंने जैव खाद्य, जैव ऊर्जा, जैव रसायन और जैव जल के उत्पादन के लिये चीनी कारखानों को जैव रिफाइनरियों में परिवर्तित करने के लिये तैयार रोड मैप का विवरण भी सामने रखा। इस मौके पर प्रो. नरेन्द्र मोहन ने कहा कि चीनी उद्योग को आर्थिक और पर्यावरणीय स्थिरता प्राप्त करने के लिय गन्ने के अवशेषों और उप

कृषि लागत व मूल्य आयोग के अध्यक्ष को जानकारी देते शर्करा संस्थान के निदेशक।

उत्पादों सहित गन्ने के सम्पूर्ण मूल्यवर्धन क्षमता का दोहन करने की आवश्यकता है। चीनी की कीमतें अस्थिर रहने और इसके विभिन्न आंतरिक और बाहरी कारकों से प्रभावित होने के कारण चीनी मिलों को अन्य स्रोतों के माध्यम से राजस्व बढ़ाने के लिये बाई प्रोडक्ट का नये तरीके से उपयोग करने की विधियों पर काम करना चाहिये। डॉ. नवीन प्रकाश सिंह ने कहा कि संस्थान को कम उत्पादन लागत पर बाजार की मांग के अनुरूप विभिन्न गुणवत्ता की चीनी के उत्पादन के लिये प्रौद्योगिकी विकसित करने पर काम करना चाहिये। साथ ही संस्थान को भारतीय चीनी उद्योग के शीर्ष संगठनों के साथ बातचीत

कृषि लागत और मूल्य आयोग के अध्यक्ष ने किया राष्ट्रीय शर्करा संस्थान का निरीक्षण

के माध्यम से मूल्यवर्धित उत्पादों के उत्पादन के लिये विकसित प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देना चाहिये। उन्होंने कहा कि चीनी उद्योग के सभी स्टॉक होल्डरों के हितों की रक्षा के लिये चीनी उद्योग को खेत से लेकर कारखाने तक काम करना होगा।

श्री सिंह ने कहा कि विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों में गन्ने की उत्पादकत काफी हद तक भिन्न-भिन्न होती है। इस पर तत्काल ध्यान देने की जरूरत है। क्योंकि यह कारण चीनी कारखानों के वित्तीय लाभ को काफी प्रभावित करता है। श्री सिंह ने संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं का निरीक्षण भी किया। उन्होंने इस दौरान खोई से प्राप्त ग्रेफीन ऑक्साइड, आहार फाइबर और बैनेलिन सहित संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न मूल्यवर्धित जैव रसायनों के बारे में भी जानकारी ली।

शोधकार्य, प्रयोगशालाओं का निरीक्षण किया

जासं, कानपुर : कृषि लागत एवं मूल्य आयोग के अध्यक्ष डा.नवीन प्रकाश सिंह ने शुक्रवार को राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआइ) का भ्रमण कर चीनी उद्योग के विविध माडल और मूल्यवर्धन के क्षेत्र में आर्थिक स्थिरता पर चर्चा की। निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन ने प्रेजेंटेशन से चीनी उद्योग के विकास में संस्थान की भूमिका की जानकारी दी। उन्होंने जैव खाद्य, जैव ऊर्जा, जैव रसायन और जैव जल के उत्पादन के लिए चीनी मिलों को जैव-रिफाइनरियों में परिवर्तित करने के लिए प्रस्तावित रोड मैप का विवरण भी प्रस्तुत किया।